Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

उदयपुर जिले में निजी अथवा सरकारी भवनों का वास्तुसंगत अवलोकन

डॉ. नीता सीकलीगर*

* पोस्ट डॉक्टारोल फैलो (संस्कृत) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना – प्रस्तुत शोध पत्र उदयपुर के सरकारी और निजी भवनों के वास्तु संगत अध्ययन पर आधारित है। आज की दुनिया में जहाँ हमारी ज़िंदगी की भागदौड़ और तनाव हमें थका देते हैं। शांति और स्थिरता की ज़रूरत वास्तविक है और सामंजस्यपूर्ण रहने की जगह बनाना अब पहले से कहीं ज़्यादा ज़रूरी हो गया है। वास्तु शास्त्र का महत्व जो वास्तुकला और डिज़ाइन का एक प्राचीन भारतीय विज्ञान है, को नज़रअंदाज़ नहीं किया जा सकता। इसलिए यदि आप इस आधुनिक दुनिया में वास्तु शास्त्र की कला और विज्ञान सीखना चाहते हैं, तो आप सही जगह पर हैं। वास्तु शास्त्र हमारे घरों को प्राकृतिक शक्तियों और शांति के साथ संरेखित करने के लिए कालातीत सिद्धांत प्रदान करता है। वास्तु शास्त्र सकारात्मक ऊर्जा प्रवाह को बढ़ा सकता है, कल्याण को बढ़ावा दे सकता है और ऐसा वातावरण बना सकता है जो हमारे आध्यात्मिक और शारीरिक स्वास्थ्य का समर्थन करता है। सैकड़ों-हजारों वर्षों के बाद भी, वास्तु शास्त्र आज भी प्रासंगिक बना हुआ है और घर के मालिकों को ऐसा वातावरण बनाने में मार्गदर्शन देता है जो खुशी, स्वास्थ्य और समृद्धि को बढ़ावा देता है।

अध्ययन के उद्देश्य :

1. उदयपुर जिले के सरकारी और निजी भवनों में वास्तुसंगत स्थितियों का अवलोकन करना।
2. उदयपुर जिले के सरकारी और निजी भवनों में वास्तुसंगत विसंगतियों को जानना।

अध्ययन क्षेत्र – प्रस्तुत अध्ययन हेतु उदयपुर जिले में 30 भवनों का अवलोकन किया गया जिसमें 15 सरकारी भवन और 15 निजी भवन थे। उक्त भवनों का अवलोकन करने से पूर्ण भवन स्वामी से आज्ञा ली गई जिसमें शोध कार्य में मूल्य-मूक्त सहयोग की अपेक्षा की गई। अवलोकन सूची अथवा प्रश्नावली के आधार पर तथ्यों का संकलन किया गया है।

भवनों में वास्तु का स्तर – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तु के स्तर का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में 13 प्रतिशत में संपूर्ण वास्तु पाया गया और 40 प्रतिशत भवनों में पूर्ण वास्तु था एंव 13 प्रतिशत भवनों में वास्तु का सामान्य स्तर देखा गया जबकि 33 प्रतिशत भवनों में अपूर्ण वास्तु पाया गया। 15 सरकारी भवनों में 0 प्रतिशत में संपूर्ण वास्तु पाया गया और 13 प्रतिशत भवनों में पूर्ण वास्तु था एंव 53 प्रतिशत भवनों में वास्तु का सामान्य स्तर देखा गया जबकि 33 प्रतिशत भवनों में अपूर्ण वास्तु पाया गया।

पूर्व दिशा का वास्तुसंगत अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में पूर्व दिशा का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 33 प्रतिशत में स्नानघर और अतिथिगृह निर्मित थे और 27 प्रतिशत में लिविंग रूम एवं पढ़ाई के कमरे बने हुए थे। 27 प्रतिशत भवनों में खुली जगह छोड़ी गई थी और 13 प्रतिशत भवनों में पूर्व दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 20 प्रतिशत में स्नानघर और अतिथिगृह निर्मित थे और 20 प्रतिशत में लिविंग रूम एवं पढ़ाई के कमरे बने हुए थे। 27 प्रतिशत भवनों में खुली जगह छोड़ी गई थी और 33 प्रतिशत भवनों में पूर्व दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) कोण का अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में दक्षिण-पूर्व (आग्नेय) कोण का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 20 प्रतिशत में रसोई निर्मित थी और 27 प्रतिशत में बिजली के मीटर लगे थे एंव 20 प्रतिशत भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे जबकि 33 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 40 प्रतिशत में रसोई निर्मित थी और 7 प्रतिशत में बिजली के मीटर लगे थे एंव 13 प्रतिशत भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे जबकि 40 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

दक्षिण दिशा का वास्तुसंगत अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में दक्षिण दिशा का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 47 प्रतिशत में शयन कक्ष निर्मित थे और 13 प्रतिशत में सीढ़ीयाँ बनी हुई थी एंव 7 प्रतिशत भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 33 प्रतिशत में शयन कक्ष निर्मित थे और 20 प्रतिशत में सीढ़ीयाँ बनी हुई थी एंव 13 प्रतिशत भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

पश्चिम-दक्षिण (नेऋत्य) कोण का अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में पश्चिम-दक्षिण (नेऋत्य) कोण का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 33 प्रतिशत में गृहस्वामी का कमरा और अलमारी थे और 0 प्रतिशत में तैयार होने की जगह और सीढ़ीयाँ बनी हुई थी एंव 40 प्रतिशत भवनों में तिजोरी और पानी की टंकी बनी हुई थी जबकि 27 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 27 प्रतिशत में शयन कक्ष निर्मित थे और 7 प्रतिशत में सीढ़ीयाँ बनी हुई थी एंव 47 प्रतिशत

भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे जबकि 20 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

पश्चिम दिशा का वास्तुसंगत अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 20 प्रतिशत में भोजनकक्ष, बच्चों के कमरे थे और 33 प्रतिशत शौचालय और गटर थी एंव 13 प्रतिशत भवनों में पानी की टंकी बनी हुई थी जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 20 प्रतिशत में भोजनकक्ष, बच्चों के कमरे थे और 27 प्रतिशत शौचालय और गटर थी एंव 40 प्रतिशत भवनों में पानी की टंकी बनी हुई थी जबकि 13 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

उत्तर–पश्चिम (वायव्य) कोण का अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में उत्तर–पश्चिम (वायव्य) कोण का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 13 प्रतिशत में अनाज रखने की जगह, गटर, अतिथि शयन कक्ष बने हुए थे और 40 प्रतिशत शौचालय, भोजन एवं अध्ययन कक्ष थे एंव 13 प्रतिशत भवनों में पार्किंग, बड़े बच्चे का कमरा था जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 27 प्रतिशत में अनाज रखने की जगह, गटर, अतिथि शयन कक्ष बने हुए थे और 20 प्रतिशत शौचालय, भोजन एवं अध्ययन कक्ष थे एंव 33 प्रतिशत भवनों में पार्किंग, बड़े बच्चे का कमरा था जबकि 20 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

उत्तर दिशा का वास्तुसंगत अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में उत्तर दिशा का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 27 प्रतिशत में तिजोरी, खुली जगह थी और 27 प्रतिशत भवनों में लिविंग रूम थे एंव 7 प्रतिशत भवनों में मुख्यद्वार थे जबकि 40 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 13 प्रतिशत में तिजोरी, खुली जगह थी और 47 प्रतिशत भवनों में लिविंग रूम थे एंव 7 प्रतिशत भवनों में मुख्यद्वार थे जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

पूर्वोत्तार (ईशान) कोण का अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में पूर्वोत्तार (ईशान) कोण का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में से 20 प्रतिशत में मुख्यद्वार और मंदिर थे और 7 प्रतिशत भवनों में झरोखा एवं आंगन थे एंव 47 प्रतिशत भवनों में वाटर टैंक और ट्युबवेल थे जबकि 27 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में से 7 प्रतिशत में मुख्यद्वार और मंदिर थे और 13 प्रतिशत भवनों में झरोखा एवं आंगन थे एंव 20 प्रतिशत भवनों में वाटर टैंक और ट्युबवेल थे जबकि 60 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

मध्य दिशा का वास्तुसंगत अवलोकन – उदयपुर में स्थित 30 भवनों के वास्तुसंगत अध्ययन के संदर्भ में मध्य दिशा का विवरण दिया गया हैं जिसमें 15 निजी भवनों में 13 प्रतिशत में खुली जगह थी और 7 प्रतिशत भवनों में प्रकाश के लिए खुली छत थी एंव 20 प्रतिशत भवनों में तुलसी का पौधा लगा था जबकि 60 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई। 15 सरकारी भवनों में 7 प्रतिशत में खुली जगह थी और 27 प्रतिशत भवनों में प्रकाश के लिए खुली छत थी एंव 7 प्रतिशत भवनों में तुलसी का पौधा लगा था जबकि 60 प्रतिशत भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

निष्कर्ष:

1. निजी भवनों में पूर्व दिशा में 27 प्रतिशत भवनों में खुली जगह छोड़ी गई थी और 33 प्रतिशत सरकारी भवनों में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।
2. दक्षिण–पूर्व (आग्नेय) कोण में 27 प्रतिशत निजी घरों में बिजली के मीटर लगे थे एंव 13 प्रतिशत सरकारी भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे।
3. दक्षिण दिशा के निजी भवनों में 47 प्रतिशत में शयन कक्ष निर्मित थे 20 प्रतिशत सराकरी भवनों में सीढ़ीयाँ बनी हुई थी।
4. में पश्चिम–दक्षिण (नेऋत्य) कोण में 33 प्रतिशत भवनों में गृहस्वामी का कमरा और अलमारी थे 47 प्रतिशत सरकारी भवनों में स्टोर रूम बने हुए थे।
5. पश्चिम दिशा के निजी भवनों के 20 प्रतिशत में भोजनकक्ष, बच्चों के कमरे थे और 40 प्रतिशत सरकारी भवनों में पानी की टंकी बनी हुई थी।
6. उत्तर–पश्चिम (वायव्य) कोण के निजी भवनों में 13 प्रतिशत में अनाज रखने की जगह, गटर, अतिथि शयन कक्ष बने हुए थे जबकि 20 प्रतिशत सराकरी भवनों में इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।
7. उत्तर दिशा में 27 प्रतिशत निजी भवनों में तिजोरी, खुली जगह थी जबकि 33 प्रतिशत भवनों में इस दिशा में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।
8. पूर्वोत्तर (ईशान) कोण में 47 प्रतिशत भवनों में वाटर टैंक और ट्युबवेल थे जबकि 60 प्रतिशत सराकरी भवनों में इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।
9. मध्य दिशा में 13 प्रतिशत निजी भवनों में खुली जगह थी जबकि 60 प्रतिशत सराकरी भवनों के इस कोण में कई प्रकार की विसंगतियाँ पाई गई।

सुझाव – वास्तु की उपयोगिता को लेकर सरकार के द्वारा बनाई जा रही विभिन्न शहरी विकास योजनाओं व सामाजिक उत्थान के लिए प्रस्तुत वास्तु आधारित भूमि नियमन और अन्य विकास योजनाओं को इस विषय से जोड़ सकते है। इस विषय पर किए गए शोध के अनुसार आम जनजीवन में नयी उर्जा का संचार कर सकते है, वास्तु आधारित गाँव, कस्बों व शहरी निकायों में नियमानुसार मकानों व सार्वजनिक जगहों को उन्नत रूप से विकसित कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Vrihad Vastushastra-a Mahagrantha.(2020).India: Notion Press Media Pvt. Limited.
2. Remedial Vaastu-Shastra.(2004).India: Diamond Pocket Books (P) Limited.
3. Bhavan Nirman and Vastu Dosh: Happiness and Samriddha in the living world.(n.d.).(n.p.): SHARDA PUBLICATIONS.
4. Indian Vastu Shastra.(2009).India: Prabhat Publications.
5. Sâstrî, K. M. (2023).Vastu Vidya: Bestseller Book by K. Mahadev Shashtri; Omprakash Bhartiya: Vastu Vidya.India: Prabhat Publications.